

सामरिक वि. (तत्.) 1. युद्ध संबंधी 2. युद्ध नीति संबंधी।

सामरिकता स्त्री. (तत्.) 1. युद्ध कार्यों में लगा रहना 2. युद्ध, लड़ाई 3. सामरिक होने की अवस्था या भाव।

सामरिकवाद पुं. (तत्.) यह मत अथवा सिद्धांत कि राष्ट्र को सदैव सैनिक दृष्टि से सशक्त एवं समर्थ रहना चाहिए और अपने हितों की रक्षा युद्ध की सहायता से करनी चाहिए।

सामरेय वि. (तत्.) युद्ध संबंधी, सामरिक।

सामर्थ्य पुं. (तद्.) सामर्थ्य, शक्ति, क्षमता।

सामर्थी वि. (तद्.) सामर्थ्यशाली, शक्तिशाली, क्षमतावान, ताकतवर।

सामर्थ्य पुं. (तत्.) 1. शक्ति, ताकत, क्षमता 2. समर्थ होने की अवस्था या भाव 3. कोई कार्य संपादित करने की योग्यता या शक्ति 4. काव्यशास्त्र में शब्द की व्यंजना शक्ति 5. व्याकरण में शब्दों का पारस्परिक संबंध।

सामल वि. (तद्.) श्यामल, कृष्ण वर्ण, साँवला रंग।

सामवायिक वि. (तत्.) 1. समवाय संबंधी, समूह संबंधी, अभेद्य संबंध वाला।

सामवायिक राज्य पुं. (तत्.) प्राचीन भारतीय राजनीति में, वे राज्य जो किसी युद्ध के निमित्त मिलकर एक हो जाते थे।

सामविद् पुं. (तत्.) वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो, सामवेद का विद्वान।

सामविप्र पुं. (तत्.) वह ब्राह्मण जो अपने सभी कार्य सामवेद के विधान के अनुसार करता है।

सामवेद पुं. (तत्.) चार वेदों में से प्रसिद्ध तीसरा वेद।

सामवेदिक/सामवेदीय/सामवेदी वि. (तत्.) सामवेद संबंधी, सामवेद का पुं. सामवेद को अपना कुल-वेद मानने वाला व्यक्ति या वंश।

साम-शाली वि. (तत्.) 1. सांत्वना देने वाला, धैर्य बँधाने वाला 2. साम, दाम, दंड और भेद नामक राजनीति के अंगों को जानने वाला राजनीतिज्ञ।

साम-सर वि. (तत्.) एक प्रकार का गन्ना जो डुमराँव (बिहार) में होता है।

साम-साली पुं. (तद्.) दे. साम-शाली।

सामस्त्य पुं. (तत्.) समस्तता, संपूर्णता।

सामाजिक वि. (तत्.) 1. समाज से संबंध रखने वाला (व्यक्ति) 2. समाज संबंधी जैसे-सामाजिक कार्य 3. समाज से संपर्क के कारण होने वाला जैसे- सामाजिक रोग पुं. साहित्य के क्षेत्र में जो काव्य, संगीत आदि का मर्मज्ञ हो, रसिक, सहृदय।

सामहिं क्रि.वि. (तद्.) सम्मुख, सामने, समक्ष, सामुहिक।

सामा स्त्री. (फा.) सामान, सामग्री।

सामाजिक अंतर्नोद वि. (तत्.) 1. सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से उत्पन्न अन्तः क्रियाओं से जन्मी वह शक्ति जो व्यक्ति को अपनी जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रेरित करती है 2. मानव-क्रियाओं का व्यापक क्षेत्र जिसमें उसकी आवश्यकताएँ, इच्छाएँ, महत्वाकांक्षाएँ, रुचियाँ, संवेग, अभिवृत्तियाँ, आदतें, भावनाएँ, प्रेरणाएँ तथा सम्मिलित होते हैं जिनका परस्पर सामाजिक क्रिया के दौरान विकास होता रहता है।

सामाजिक अनुशासन पुं. (तत्.) व्यक्ति के व्यवहार का नियमन जो समुदाय अथवा राष्ट्र के द्वारा किया जाता है। social discipline

सामाजिक अभियांत्रिकी स्त्री. (तत्.) समाज की विशिष्ट समस्याओं को हल करने तथा मान्य उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समाजशास्त्रीय सिद्धांतों नियमों का अनुप्रयोग।

सामाजिक आचार पुं. (तत्.) 1. समाज के नियमों के अनुसार व्यवहार करने का चारित्रिक गुण 2. समुदाय के सदस्यों का व्यवहार जो ऐच्छिक हो